ISSN 2230-8962

वेदविद्या
VEDAVIDYĀ

अन्तराष्ट्रियस्तरे मानिता, सन्दर्भिता, प्रवरसमीक्षिता च शोध-पत्रिका
Internationally Recognized Refereed & Peer-reviewed Research Journal

अङ्कः ३३
Vol. XXXIII

जनवरी-जून२ ०१९
January - June 2019

सम्पादक
प्रो. विरूपाक्ष वि. जड्डीपाल्

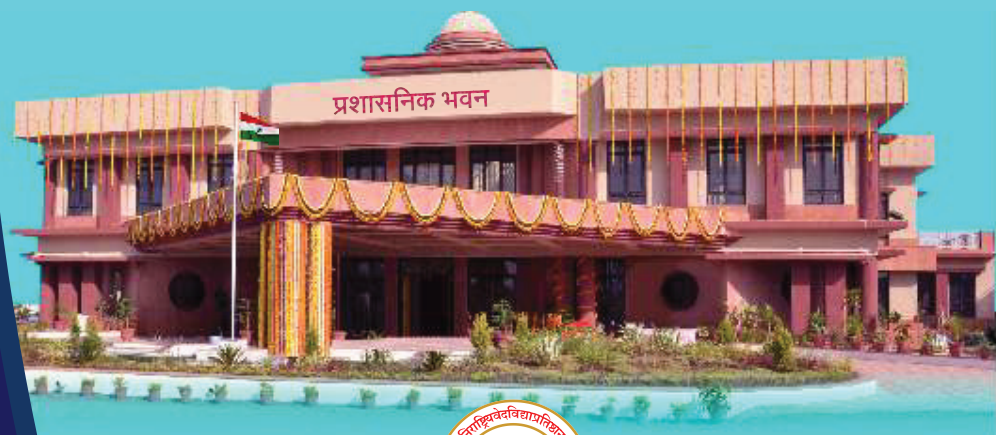

महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रियवेदविद्याप्रतिष्ठानम् उज्जयिनी
(मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयभारतसर्वकारस्याधीनम्)

ISSN 2230-8962

वेदविद्या
VEDA-VIDYĀ

अन्ताराष्ट्रियस्तरे मानिता, सन्दर्भिता, प्रवरसमीक्षिता च शोध-पत्रिका

Internationally Recognized Refereed & Peer-reviewed Research Journal l

अङ्क : 33 जनवरी-जून २०१९
Vol. XXXIII January-June2019

सम्पादकः
प्रो. विरूपाक्ष वि. जड्डीपाल्
सचिवः

महर्षि-सान्दीपनि-राष्ट्रिय-वेदविद्या-प्रतिष्ठानम्
(भारतसर्वकार-मानवसंसाधनविकास-मन्त्रालयाधीनम्)
वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण गणेश, पो.ऑ. - जवासिया, उज्जैन ४५६००६

मुख्य-संरक्षकः
डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक'
(अध्यक्ष, महर्षि-सान्दीपनि-राष्ट्रिय-वेदविद्या-प्रतिष्ठान, तथा
मानव संसाधन विकास मन्त्री, भारत सरकार)

संरक्षकः
प्रो. रवीन्द्र अम्बादास मुळे
उपाध्यक्षः, महर्षि-सान्दीपनि-राष्ट्रिय-वेदविद्या-प्रतिष्ठानम्

सम्पादकः
प्रो. विरूपाक्ष वि. जड्डीपाल्
सचिवः, महर्षि-सान्दीपनि-राष्ट्रिय-वेदविद्या-प्रतिष्ठानम्

अक्षरसंयोजिका
श्रीमती मिताली रत्नपारखी

मूल्यम्
वार्षिक शुल्क २००/-

पत्राचार-सङ्केतः
महर्षि-सान्दीपनि-राष्ट्रिय-वेदविद्या-प्रतिष्ठानम्
वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण गणेश, पो.ऑ. - जवासिया, उज्जैन 456006
दूरभाष : (0734)2502266, 2502254 तथा फैक्स : (0734) 2502253
e-mail : msrvvpujn@gmail.com, Website : msrvvp.ac.in

सूचना - अत्र शोधनिबन्धेषु प्रकाशिताः सर्वेऽपि अभिप्रायाः तत्तन्निबन्धप्रणेतॄणामेव, ते अभिप्रायाः न प्रतिष्ठानस्य, न वा भारतसर्वकारस्य।

समीक्षा समिति

प्रो. श्रीपाद सत्यनारायण मूर्ति
सम्मानीय भारतीय राष्ट्रपति से पुरस्कृत विशिष्ट विद्वान् एवं
सेवानिवृत्त प्रोफेसर (व्याकरण),राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति

प्रो. प्रफुल्ल कुमार मिश्र
माननीय कुलाधिपति, डॉ.राजेंद्र प्रसाद राष्ट्रीय कृषि विश्वविद्यालय, बिहार;
पूर्व निदेशक, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नई दिल्ली; एवं सेवानिवृत्त प्रोफेसर (संस्कृत),
उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, ओडिशा

प्रो. ईश्वर भट्ट
प्रोफेसर (ज्योतिष), राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली

प्रो. एस. वि. रमण मूर्ति
सेवानिवृत्त प्रोफेसर, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, गुरुवायूर, केरल

डॉ. नारायण पूजार
एसोसिएट प्रोफेसर (द्वैतवेदान्त), राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति

सम्पादक मण्डल

प्रो. विरूपाक्ष वि. जड्डीपाल्
सचिव, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

प्रो. केदारनारायण जोशी
सम्माननीय भारत राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत विशिष्ट विद्वान् एवं
सेवानिवृत्त प्रोफेसर (संस्कृत), विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

आचार्य (डॉ.) सदानन्द त्रिपाठी
शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, उज्जैन

आचार्य श्री श्रीधर अडि
अथर्ववेद के मूर्धन्य विद्वान् एवं प्रख्यात वेदपाठी, गोकर्ण

प्रो. चक्रवर्ति राघवन
प्रोफेसर (विशिष्टाद्वैतवेदान्त), राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति

डॉ. दयाशंकर तिवारी
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत), दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. अनूप मिश्र,
डीडीओ, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

विषयानुक्रमणिका

क्र.		पृष्ठ
	सम्पादकीयम्	i-iv
संस्कृत-सम्भागः		
१.	**वेदाध्ययने शिष्यधर्मः** डॉ. रा. सुब्रह्मण्य भिडे	१-९
२.	**अर्वाचीनवेदभाष्यकृतां कपालिशास्त्रिणां वैदिकं चिन्तनम्** डॉ. नारायणः	१०-१३
३.	**पद पाठकानां विषये किञ्चित् विमर्षणम्** प्रो. एच. घनपाठी भट	१४-१५
४.	**लोकतन्त्रसंरक्षणे वेदस्य प्रासङ्गिकत्वम्** डॉ. अजय कुमार मिश्र	१६-२०
५.	**वेदे वर्णितं भौगलिकतत्त्वम् : एकं समीक्षणम्** सुचन्द्रा मुखर्जी	२१-२६
६.	**ऋग्वेदभाष्यकाराः** स्वाती सुचरिता पट्टनायकः	२७-३३
हिन्दी-सम्भाग		
७.	**पंजाबप्रदेशस्य वेदाध्ययनेऽवदानम्** प्रो. वीरेन्द्र कुमार अलंकारः	३४-५८
८.	**आस्य देवताओं का स्वरूप तथा तत्सम्बन्धी सृष्टिविद्या** आचार्य वेदव्रत	५९-६३
९.	**वैदिक शिक्षा-दर्शन** हर्षा कुमारी	६४-७७
१०.	**तैत्तिरीयोपनिषद् के आलोक में मानव की महती आवश्यकता : अन्न** डॉ. मीना शुक्ला	७९-८३
११.	**सूर्य चराचर जगत् का प्रत्यक्ष ईश्वर** डॉ. कृष्णमोहन पाण्डेय	८४-९१

अङ्क-३३
जनवरी-जून २०१९

वेदविद्या
ISSN-२२३०-८९६२

वैदिक शिक्षा-दर्शन

हर्षा कुमारी

वैदिक ऋषियों को आदि काल से यह ज्ञात था कि जहाँ शिक्षण वहाँ प्रगति एवं जहाँ शिक्षण नहीं वहाँ अधोगति। इसलिए वैदिक ऋषियों ने शिक्षा की सतत प्रेरणा देते हुए कहा है कि ऋतं च स्वाध्यायप्रवचने च।सत्यं च स्वाध्यायप्रवचने च। तपश्च स्वाध्यायप्रवचने च।दमश्च स्वाध्यायप्रवचने च। स्वाध्याय अर्थात् अध्ययन, प्रवचन अर्थात् अध्यापन। तै.उप. १/१७

इस प्रकार हमारे यहाँ पढ़ना और पढ़ाना शास्त्र का आदेश है। अतएव इस अद्वितीय धरोहर की हमें रक्षा करना चाहिए। वैदिक ग्रन्थों के ही साङ्गोपाङ्ग अध्ययन के पश्चात् हमें यह ज्ञात होता है कि क्या पढ़ना, पढ़ाना चाहिए एवं पढ़ने पढ़ाने वालों के मध्य कैसे सम्बन्ध होने चाहिए, पढ़ाने की पद्धति कैसी होनी चाहिए, पढ़ाने वालों के आचरण कैसे होने चाहिए, स्त्रियों को पढ़ने का अधिकार मिलना चाहिए या नहीं इत्यादि। वस्तुतः शिक्षा सम्बन्धी वैदिक आर्यो की सोच आज भी उतनी ही प्रासङ्गिक है जितनी उस समय थी।

शिक्षा शब्द 'शिक्ष' धातु से निश्पन्न है जिसका अर्थ सीखना है। इसका प्रयोग विद्या ग्रहण के लिए हुआ है। शिक्षा[१] शब्द संकुचित तथा वृहत् उभय अर्थो में प्रयुक्त हुआ है। शंकराचार्य[२] के मत के अनुसार जिसके द्वारा वर्णादि का उच्चारण सीखा जाए,वह शिक्षा है। इस विवेचन के मूल में संकुचित दृष्टि का निर्वाह हुआ है। उपनिशद्काल में केवल वर्णादि की शिक्षा ही नहीं थी वरन् दम, दान, दया सादृश्य आत्मिक गुणों के विकास का प्रावधान भी सन्निवेष्ट था।[३] यही कारण था कि तैत्तिरीय उपनिषद् के शिक्षा वल्ली में स्नातकों के उपदेश विधान में व्यक्ति के आध्यात्मिक एवं भौतिक जीवन दोनों के उत्कर्ष का विधान पाया जाता है।

अध्ययन के विषय एवं शिक्षा का उद्देश्य

मुण्डक उपनिषद् में अंगिरा ऋषि अपने शिष्य शौनक के समक्ष दो प्रकार के पाठ्यक्रम का वर्णन करते हैं- अपरा विद्या और परा विद्या। अंगिरा ऋषि का कहना है कि ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद,

---

१ शिक्ष् विद्योपादाने। वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी, भ्वादि प्रकरण, धातु क्रमांक ६०५, पृ. १३६

२ तै. उप. १/२/१ पर शंकर भाष्य

३ वृह. उप. ५/२/३